दिसम्बर 2015-जनवरी 2016
द्विमासिक पत्रिका
सत्यापित क्र. भ्ा्र भ्प्छ 04496द07द1द2007.ज्प्ड

वर्ष-9 अंक-5
15 जनवरी 2016

सेवा दर्शन से प्रभु पूजा

परामर्शदाता : प्रान्त सेवाप्रमुख : श्री कृष्ण कुमार संघ कार्यालय, सोनीपत।
मो. 090342-83251
स्वामी : सेवा भारती (पंजी.), हरियाणा।
अध्यक्ष : प्रो. डॉ. बुद्ध सिंह
सी-7, अशोक विहार, फेज़ 2, गुड़गांव-122001 - 099718-02274
सम्पादक एवं प्रकाशक : ओम प्रकाश अत्रेजा
ई-230, अर्जुन गेट, करनाल-132001
- 0184-2255852, 2255874
पत्रिका प्रबन्धक :
ओम प्रकाश वर्मा, एम.ए.बी.एड.
0184-2200130, 92551-60716

सेवा दर्शन से प्रभु पूजा का सम्पादन, लेखन व अन्य सब कार्य अवैतनिक हैं

सम्पादकीय- विक्रमी संवत् 1335 के एक शिलालेख से उद्धृत्

देशोऽस्ति हरयाणारण्यः पृथिव्यां स्वर्गसन्निमः।

(हरियाणा नाम का एक देश (प्रदेश) है,जो इस धरती पर स्वर्ग के समान है)

हरियाणा की पावन धरा को आदि सृष्टि की जन्म-स्थली और भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का केन्द्रबिन्दु माना जाता है। यहाँ पर युगों-युगों से ऋषि मुनियों का वास रहा है, जिन्होंने सरस्वती नदी के तट पर बैठकर वेदों की रचना की। महाभारत काल से सदियों पूर्व यहीं से महाराजा कुरू ने हल चलाकर कृषि-युग का सूत्रपात किया था। देश के इतिहास में कुरुक्षेत्र का विशेष महत्त्व रहा है। ध ार्मक्षेत्र-कुरुक्षेत्र श्रीमद्भगवद्गीता की पवित्र जन्मस्थली है। महाभारत का ऐतिहासिक युद्ध यहीं पर हुआ था। इसी पवित्र भूमि पर ज्योतिसर के स्थान पर भगवान श्री कृष्ण ने मोहग्रस्त अर्जुन को निःस्वार्थ कर्मयोग, समता व सामाजिक न्याय से परिपूर्ण गीता का अमर सन्देश दिया था, जिसका अनुसरण आज सुख व शांति की खोज में न केवल भारतवर्ष बल्कि समूचा विश्व कर रहा है। भगवान श्री कृष्ण की चरणरज छूने वाली हरियाणा की धरती हमें सन्देश देती है कि साहसी और निष्कपट बनकर कर्म के पथ पर निरन्तर बढ़ते चलो।

"गीता उपनिषदों के उपवन से चयनित आध्यात्मिक सत्य के सुन्दर पुष्पों का एक अनुपम गुच्छ है"। **-स्वामी विवेकानन्द**

"जब शंकाएं मुझे घेरती हैं, निराशाएं मेरे सम्मुख आती हैं और दूर क्षितिज तक आशा की कोई किरण नज़र नहीं आती, तब श्रीमद्भगवद्गीता के श्लोक मुझे सहारा देते हैं। दुःख से घिरे होने के बावजूद, मैं उसी क्षण मुस्करा देता हूँ। जो लोग श्रीमद्भगवद्गीता का प्रतिदिन ध्यान करते हैं, वे उसमें से हर दिन नया आनन्द और नया अर्थ ढूँढ लेते हैं। मैं तो चाहता हूँ 'गीता' केवल राष्ट्रीय

इस पत्रिका को आप स्वयं पढ़ें तथा अपने मित्र-बन्धुओं को पढ़ने के लिए दें।

शालाओं में ही नहीं बल्कि प्रत्येक शिक्षण संस्थान में पढ़ाई जाये। एक हिन्दू बालक या बालिका के लिए 'गीता' को ना जानना शर्म की बात होनी चाहिये।"
-महात्मा गाँधी

"मेरा विश्वास है कि दुनिया में प्रचलित भाषाओं में भगवान् श्रीकृष्ण की उपदेशावली श्रीमद्भगवद्गीता के समान छोटे आकार में विपुल ज्ञान से परिपूर्ण द्वितीय कोई ग्रन्थ नहीं है।" **-पं. मदनमोहन मालवीय**

"मेरे जीवन का ऐसा कोई दिन नहीं गया, जिस दिन मैंने गीता के किसी श्लोक का मनन नहीं किया हो।" **-लोकमान्य बालगंगाधर तिलक**

"गीता अक्षय मणियों की खान है। यदि युगों तक इस खान से मणि निकालते रहेंगे, तो भावी कर्णधार इसमें से नये-नये अमूल्य मणि-माणिक्य पाकर प्रसन्न एवं चकित होते रहेंगे।" **-श्री अरविन्द**

"मेरी अंतरिक्ष यात्रा के समय मेरे साथ में रखी गीता, प्रतिक्षण मेरा उत्साह बढ़ाती थी। इसलिए मैं 175 दिन तक लगातार अंतरिक्ष में रहने का विश्व रिकॉर्ड बनाने में सक्षम हुई।" **-अन्तरिक्ष यात्री सुनीता विल्यमस्**

"गीता कहती है, कि संसार से भागने की आवश्यकता नहीं। बाधा संसार में नहीं हमारे भीतर है।" **-डॉ. एनि बेसेंट्**

"गीता सत्य का पथनिर्देशन करने वाली सत्य की पहचान कराने वाली भेदाभेद दूर कराने वाली आनन्ददायिनी विलक्षण कृति है।" **-दारा शिकोह**

"गीता दुनिया का बेहतरीन इल्मी तोहफ़ा है। इस एक किताब में दुनिया के सारे फिरकों का निचोड़ पेश कर दिया जाता है। गीता, यह मानवता का सर्वोत्तम आध्यात्मिक ग्रन्थ है।" **-अलबेरूनी**

"प्राचीन युग की सर्वोत्तम वस्तुओं में 'गीता' सर्वश्रेष्ठ वस्तु है। 'गीता' में ऐसा उत्तम और सर्वव्यापी ज्ञान है, उसकी रचना के असंख्य वर्ष हो गये, फिर भी ऐसा दूसरा कोई ग्रन्थ नहीं लिखा गया है।" **-हैनरी डेविड थोरो**

"गीता का उपदेश मनुष्य को उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचाने के लिए अद्वितीय माध्यम है।" **-वारेन् हैस्टिंग**

"श्रीमद्भगवद्गीता विश्व की सबसे सुन्दर एवं महान् ज्ञान की दार्शनिक कृति है। सबसे सुन्दर, सम्भवतः एकमात्र आध्यात्मिक संगीत जो किसी भाषा में उपलब्ध है, वह है गीता।" **-विलहेम वॉन हम्बोल्ड**

"श्रीमद्भगवद्गीता नित्य दर्शन का सबसे स्पष्ट और व्यापक सार है।

इसलिए इसका महत्त्व, न सिर्फ भारतीयों के लिए, बल्कि पूरी मानवता के लिए चिरस्थाई है।" **-एल्डूयस हक्सले**

"जीवन और जगत में ऐसी कोई समस्या नहीं, जिसका समाधान गीता में नहीं है।"-**इमर्सन**

"भारतीय साहित्य की कोई भी कृति श्रीमद्भगवद्गीता से अधिक उद्धत नहीं है, क्योंकि पश्चिम में इस से अधिक किसी अन्य ग्रन्थ को पसन्द नहीं किया गया।" -**गेडेस मैकग्रेगर**

"प्रातः काल उठकर मैं अपने हृदय, मन एवं विवेक को गीता रूपी पवित्र गंगाजल से स्नान करवाता हूँ।" -**हेनरी डेविड थोरो**

"जब भी मैं श्रीमद्भगवद्गीता को पढ़ता हूँ और चिंतन करता हूँ कि भगवान ने इस ब्रह्माण्ड को कैसे रचा, तो बाकी सब कुछ बेमानी लगता है।"

-अलबर्ट आईंस्टीन

आओ बन्धू धर्म का अर्थ समझें।

विश्व के प्रायः सभी तथाकथित धर्मनिर्पेक्ष सत्तालोलुप लोगों- विशेष रूप से अंग्रेज़ों और उनके भारतीय मानस-पुत्रों ने सभी देशों और जातियों में ईश्वर की उपासना की विविध प्रणालियों के उनकी भाषाओं में उच्चारित किए जाने वाले शब्दों का अनुवाद संस्कृत का शब्द 'धर्म' कर दिया है, जबकि संस्कृत के किसी भी प्राचीन ग्रन्थ में धर्म शब्द का ऐसा कोई अर्थ नहीं निकलता। धर्म शुद्ध रूप से संस्कृत भाषा का शब्द है। इस शब्द का समानार्थी शब्द विश्व की किसी भी भाषा में नहीं मिलता। 'धर्म' शब्द संस्कृति की 'धृ' धातु से बना है, जो धारण करने के अर्थ में आती है। विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद में धर्म शब्द का प्रयोग संसार को चलाने वाले नियमों के अर्थ में किया गया है। धर्म शब्द का संस्कृत भाषा में अनेकानेक अर्थों में प्रयोग होता है। धर्म का अर्थ है श्रेय - अर्थात् मंगल **'य एव श्रेयस्कर स एव धर्म शब्देनोच्यते'**। धर्म से हमारा श्रेय-अर्थात् कल्याण, इस संसार में भी होता है और मृत्यु के बाद भी। स्मृति ग्रन्थों में धर्म का अर्थ नैतिक कर्त्तव्य से लिया गया है। (धर्म शब्द के निकट एक अरबी भाषा का शब्द **दीन** है)। हम अपने शरीर, आत्मा, परिवार, समाज, अपने राष्ट्र के प्रति ईमानदारी से अपने नैतिक कर्त्तव्यों का पालन करें, तभी हम धार्मिक हैं। शुद्ध आचरण, शुद्ध विचार और सद्चरित्र ही धर्म है। धर्म का अर्थ है-नैतिक कर्त्तव्य, जैसे पुत्र-धर्म माता-पिता धर्म, पति-धर्म, पत्नी-धर्म, सेवक-धर्म, स्वामी-धर्म, आचार्य-धर्म, विद्यार्थी-धर्म,

राज-धर्म, प्रजा-धर्म, राष्ट्र-धर्म, राष्ट्र-धर्म आधुनिक युग में सर्वोपरि है। मूलरूप से धर्म वह है, जिस पर महापुरुष चलते हैं और हम उनका अनुकरण करते हैं। आसान भाषा में कहें तो-जिस व्यवहार की हम दूसरों से अपेक्षा करते हैं वही व्यवहार हम औरों के प्रति करें।

धर्म का पूजा-पाठ से कुछ लेना देना नहीं। पूजा-पाठ के बग़ैर भी कोई व्यक्ति धार्मिक हो सकता है। संत रविदास मंदिरों में बैठकर पूजा नहीं किया करते थे, वह दिन-रात जूते के व्यापार में लगे रहते थे। कबीरदास कभी किसी मंदिर, मस्जिद में नहीं गए। कोई तिलक-माला नहीं धारण की, लेकिन इन लोगों से बड़ा धार्मिक आदमी खोजना मुश्किल है, वे संपूर्ण रूप से धार्मिक व्यक्ति थे। लेकिन दुर्भाग्य से आज धर्म की ग़लत व्याख्या की जा रही है। धर्म को रिलीजन कहा गया मज़हब कहा जा रहा है, पूजा-पाठ कहा जा रहा है। श्री गुरु नानक देव जी से लेकर गुरु गोबिन्द सिंह महाराज तक दसों गुरुओं ने कभी नहीं कहा, कि हम नये सिक्ख धर्म की सृजना कर रहे हैं। उन्होंने कहा- **आज्ञा भई अकाल की तभी चलायो पंथ, सब सिक्खन को हुकम है गुरू मान्यो ग्रन्थ**। गुरू गोबिन्द सिंह महाराज ने और भी कहा अखिल जगत में खालसा पंथ गाजे, जगे धर्म हिन्दू सकल भण्ड भाजे। उन्होंने भी पंथ और धर्म में अन्तर बताया। भारत के किसी ऋषि-मुनि या महापुरुष ने किसी नए धर्म की सृजना नहीं की, बल्कि मनुस्मृति में शुद्ध रूप से धर्म की व्याख्या कर दी।

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।

धैर्य, क्षमा, दया (मनःसंयम), चोरी न करना, शौच (आंतरिक तथा बाह्य पवित्रता), इंद्रियनिग्रह (विषयों के अधोगामी प्रवाह को रोकना), धी (विवेक-बुद्धि), विद्या (आत्मज्ञान, सत्कर्मों में प्रवृत्ति), सत्य और अक्रोध। ये दस धर्म के लक्षण हैं। आधुनिक युग के धोखेबाज़ों ने धर्म के अर्थ को अनर्थ करके इतना भयंकर प्रचार कर दिया, कि आज धर्म का नाम लेते ही हमारे मन में मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, गिरजाघर, मुल्ला की बांग, माता के जगराते, घंटियों की आवाज़ें, कबरों मज़ारों का पूजा-पाठ आदि की ओर ध्यान चला जाता है। यह धर्म नहीं है, हम वहाँ जाएं, सिर झुकाएं, नाक रगड़ें, जप-व्रत, तिलक-छाप, माला-फेरना, शिव-नाम जपना, हज़ारों बार गायत्री-मन्त्र जपना, लाखों करोड़ों बार राम-नाम लिखना आदि इन से यह तो कहा जा सकता है, कि आपकी धर्म में आस्था है, परन्तु मन कुविचारों से भरा हो, आचार-व्यवहार

पवित्र न हों, तो सारे के सारे कर्मकांड बेकार हैं। कोई व्यक्ति प्रतिदिन मंदिर जाता है, परंतु वहाँ से लौटकर छल-कपट, हिंसा, झूठ, चोरी आदि करता है, तो वह धार्मिक नहीं कहलाएगा। एक व्यक्ति मंदिर नहीं जाता, पूजा-पाठ नहीं करता, परंतु उसके विचार निर्मल हैं, सबकी सेवा-सहायता करता है, किसी का बुरा नहीं करता, मन सत्य, अहिंसा, करुणा, दया आदि से भरा है - ऐसा व्यक्ति धार्मिक है। कर्मकाण्ड का भी जीवन में अपना महत्त्व है, जब कर्मकाण्ड का उद्देश्य अपने मन-वचन-कर्म को निर्मल बनाने का हो। इसलिए कहा-आचारः प्रथमो धर्म-अर्थात् सदाचार-वे श्रेष्ठ गुण जिनको अपनाने से हमारा भी हित हो और दूसरे का भी, इससे जीवन में सुव्यवस्था, अनुशासन, पूर्णता और पवित्रता आती है, शास्त्रों में सदाचार को प्रथम धर्म माना है, आचार ही धर्म का आधार है। हमारे धर्मशास्त्र पग-पग पर हमें निर्देश देते हैं- कि सच्चा धार्मिक, सच्चा आस्तिक-जिसका चित्त शांत है, जिसमें सबके लिए कोमल भाव है, जिसका इंद्रियों पर नियंत्रण है, जो मन-वाणी-कर्म से किसी से बैर नहीं रखता, जो दयालु है, चोरी-हिंसा से दूर रहता है, दूसरों के अच्छे कामों में साथ देता है, सदा श्रेष्ठ आचरण करता है, जो दूसरों की प्रसन्नता में प्रसन्न होता है, सभी प्राणियों में ईश्वर के दर्शन करता है, किसी से ईर्ष्या नहीं करता, दीन-दुखियों पर दया करता है, दूसरों का हित करता है, दूसरों के गुणों से प्रसन्न होता है, दूसरों के दोषों को ढकता है, वही व्यक्ति सच्चा धार्मिक है।

सेवा भारती, सिरसा

प्रमाण-पत्र वितरण : मोहल्ला थेड़ में चलाये जा रहे राशोबा महिला प्रशिक्षण व सिलाई केन्द्र तथा भाखड़ा मिल क्षेत्र में चलाये जा रहे कल्पना चावला सज्जा केन्द्र की बहिनों का 6 माह का कोर्स अप्रैल 2015 से सितम्बर 2015 तक पूरा करने के उपरान्त परीक्षा उत्तीर्ण करके 20 बहिनों को संस्था के ज़िला संरक्षक श्री ज्ञानचंद गोयल, ज़िला सचिव श्री बिहारीलाल बंसल एवं नगर अध्यक्ष श्री सोहनलाल मक्कड़ द्वारा प्रमाण-पत्र वितरित किये गये। इस अवसर पर केन्द्र की बहिनों ने भजन और देशभक्ति गीत सुनाकर सभी का मन मोह लिया। केन्द्र की अध्यापिका सिमरन कौर व हेमलता भी उपस्थित थीं। अन्त में सबने मिलकर जलपान किया। **-बिहारी लाल बंसल**

अल्लाह के बाद मुसलमानों की सुरक्षा की गारण्टी सिर्फ़ हिन्दू हैं। अगर हिन्दू सेक्युलर न होता तो इतने मज़हब हिन्दुस्तान में सुरक्षित न रहते।**-जस्टिस एज़ाज़ सिद्दीकी**

दुनियां में सब देशों से न्यारा हिन्दुस्तान

जहाँ अनेकों फ़िरके मत, पंथ, मज़हब को मानने वाले, यहाँ तक कि एक ही प्रकार की मूर्ति को भिन्न-भिन्न प्रकार से पूजा करने वाले, सैंकड़ों भाषाएं बोलने वाले, अलग-अलग पहरावे, रूप-रंग, खान-पान, रहन-सहन करने वाले लोग शान्ति से, सुखपूर्वक, मिलजुलकर जीवन जीते हों, दुनियां भर में केवल हिन्दुस्तान ऐसा देश है, जहाँ मुसलमानों की मस्जिदें, ईसाईयों के गिरजाघर, पारसियों के पूजागृह संख्या में तथा सुरक्षा में सबसे अधिक हैं। ऐसे देश के बारे में एक सच्चे मानवतावादी पाकिस्तानी मुसलमान के विचार पढ़ें। -सम्पादक

सबसे बुरा था भारत का विभाजन : मेरे घर के लोग और नज़दीकी रिश्तेदार अलग-अलग देश और अलग-अलग संस्कृतियों से हैं। मैं सुन्नी मुसलमान हूं। मेरी बीवी पंजाबी है। इतनी विविधता और समग्रता भारत में ही हो सकती है। कुछ पाकिस्तानियों को मेरी बात बुरी लग सकती है, लेकिन सबसे ख़राब घटना तभी हुई जब इस देश का बंटवारा हुआ और एक मुस्लिम राष्ट्र खड़ा कर दिया गया। बाजू का कट जाना क्या होता है, इस दर्द को मैं केवल महसूस कर सकता हूं। यह हिन्दुस्तान का भी दर्द है, इसे समझिए। यह कैसे हो सकता है कि जिस देश के बाजू कट जाएं और वह उफ़ भी न करे। जिन्होंने यह किया उन्हें समझना होगा, कि जब ऐसा होता है तब रंजो-गम भी होते हैं। मैं कहूंगा कि हिंदुस्तानियों के साथ ज़्यादती हुई है। जब मैं अपनी बात कहता हूं तो मुझे इंडियन एजेंट कहा जाता है। हम बार-बार मुस्लिम तुष्टीकरण की बात क्यों करते हैं? हम उस समय क्यों नहीं कुछ बोले जब सऊदी अरब के शेखों ने मुसलमानों के सबसे बड़े धर्मस्थल मक्का मदीना पर कब्ज़ा कर लिया। कोई आवाज़ नहीं उठी, क्यों कि उनके पास पैसा है। उन्होंने पैगम्बर मोहम्मद के घर को बर्बाद कर दिया। दुनिया भर में आतंक के नाम पर आज जो कुछ भी दिख रहा है, उसकी जननी सऊदी अरब और पाकिस्तान ही है। 9/11 पर जो हुआ, उसकी साज़िश के पीछे सऊदी अरब के लोग थे। हमले के सूत्रधार पायलट सऊदी अरब के थे। लादेन वहीं का था। बाद में लादेन और उमर को पाकिस्तान में ही शरण दी गई। दुनियाभर के उग्रवाद में कहीं न कहीं यह दोनो ही शामिल हैं। दुनिया में अलहुदा नाम का संगठन कट्टर आतंक की तालीम दे रहा है। पूरी दुनिया में इसके 40 हज़ार सेंटर हैं। अमेरिका के कैलिफोर्निया शहर में गोलाबारी करने वाली पाकिस्तानी महिला ने इसी संगठन से तालीम ली थी।

आज़ादी से पहले जब इस देश में चुनाव हुए, तो मुंबई से लेकर पटना तक मुस्लिमों ने बड़ी तादाद में मुस्लिम लीग को वोट दिया, लेकिन आज जहाँ पकिस्तान है, उस इलाके में किसी ने मुस्लिम लीग को वोट नहीं दिया था, परन्तु दुर्भाग्य देखिए आज वहां पाकिस्तान बन गया है। ;जिन्होंने पाकिस्तान के हक में वोट दिया उन्हें भारत में ही रहने दिया और जिन्होंने पाकिस्तान के विरु(वोट दिया, उन्हे पाकिस्तान दे दिया। पूरा बलोचिस्तान सरहदी गांधी बादशाह खां के नेतृत्व में पाकिस्तान के विरु(था।द्ध जहां कल तक पंजाबी और सिंधी का बोलबाला था, वहां उर्दू थोप दी गई। वहां का बाशिंदा न घर का रहा, न घाट का। पाकिस्तान से तो इसका लेना देना ही नहीं है। लाहौर राम के बंदे का शहर था। रामायण पंजाब की थी। उर्दू के नाम पर सिंधी पर पाबंदी लगाई गई। आज पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में जो कुछ हो रहा है, उसके बारे में हिंदुस्तानियों को न केवल जानना चाहिए, बल्कि दखल भी देना चाहिए। मुझे समझ में नहीं आता, कि भारत क्यों इस बारे में कुछ नहीं बोलता? यदि हम भारत की बात करें तो सवाल है, कि असहिष्णुता पर बात करने वाले लोग तब कहां थे, जब कश्मीर से हिन्दू पीड़ितों को बेघर कर दिया गया। वह अपने ही देश में शरणार्थी हो गए। मुट्ठी भर पाकिस्तानी कश्मीर में खुला तांडव कर रहे हैं और आप चुपचाप वैठे हैं। यह असहिष्णुता किसी को क्यों नहीं दिखती? एक बात और कहूंगा, जो मुझे बहुत खराब लगती है-भला मुस्लिम धार्मिक स्थलों में महिलाएं क्यों नहीं जा सकती? जब यह आपके देश में हो रहा है, तो इसका विरोध क्यों नहीं होता? मुझे यह भी समझ में नहीं आता, जब औरगंज़ेब रोड का नाम बदला जाता है, तो उसके बोर्ड पर काला पेंट कोई मुसलमान क्यों नहीं लगाता? क्यों कोई मुसलमान अपने बच्चों का नाम दारा शिकोह नहीं रखता? हम मुसलमानों को अपना घर भी साफ़ रखना चाहिए। मुसलमानों के लिए फ़ैशन हो गया है, कि वो खुद के मुसलमान होने के लिए अमेरिका को गाली दें। अरबी परिधान पहनने वाले भारतीय मुस्लिम, भारत के राष्ट्रीय गीत 'वन्दे मातरम्' का अपमान करते हैं। अगर आप भारत को प्यार करते हैं तो आप वन्दे मातरम् का अपमान नहीं करेंगे और अपने बच्चों को अरबी नहीं भारतीय नाम देंगे।

यहां मैं यह ज़रूर कहूंगा कि दादरी ;यू.पी.द्ध में जो कुछ हुआ वह हिंदुस्तान के मुंह पर धब्बा था। इसके विरोध में लेखकों और बु(जीवियों ने पुरस्कार वापिस किए, तो मैं मानता हूं कि उन्होंने ग़लत नहीं किया। वह इसके अलावा और कर भी क्या सकते थे? यह उनका हक था, लेकिन यह सवाल भी है,कि जब केरल में मुस्लिम कट्टरपंथियों ने एक प्रोफ़ेसर का हाथ काट दिया था, जब पश्चिम बंगाल से तसलीमा नसरीन को निकाल दिया गया था, तब यह लोग कहां थे, तब कहां थे मार्क्सवादी प्रगतिशील साहित्यकार? कहां थी अरुंधति राय? यह समझ लीजिए कि जब तक

पाकिस्तान रहेगा भारतवासियों की ज़िन्दगी में अमन चैन नहीं होगा। यकीन मानिए पाकिस्तान में बच्चों को पाँच साल की उम्र से ही भारत के खिलाफ़ शिक्षा दी जाती है। इसके लिए पाकिस्तान को तोड़ना होगा। यकीन मानिए, पाकिस्तान में बच्चों को पाँचवी कक्षा की उम्र से ही भारत के खिलाफ़ शिक्षा दी जाती है। यकीन मानिए हिंदुस्तान में जितने धर्मों के और जितनी विविधताओं के लोग रहते हैं और यहां की जो फ़िज़ा है, उसमें **मैं यही कहूंगा कि हिदुस्तान वाले जन्नत में रहते हैं।** अब मैं यह कहना चाहूंगा कि हिंदुस्तान के मुसलमान यह अच्छी तरह से तय कर लें कि यही उनका मुल्क है। जब भारत पाकिस्तान से बांग्लादेश की लड़ाई लड़ रहा था, तो उस जंग में भारतीय मुसलमानों का रुख किस ओर था? यह आप बखूबी जानते हैं, कि इस बारे में मुझे कुछ नहीं कहना है। हां, यह भी तय है, कि हिंदुस्तान में न तो हिंदुओं का काम मुसलमानों के बग़ैर चलना है और न ही मुसलमानों का काम हिन्दुओं के बगैर। प्यार से गले लगिए और साथ चलिए। हिंदुस्तानी मुसलमान यह कबूल करें कि हम सभी के वंशज हिंदू हैं। **-तारिक फ़तेह-पाकिस्तानी मूल के कनाडाई चिन्तक हैं**

माधव समिति, पंचकूला

25 अक्तूबर, 2015: सेवा भारती, माधव समिति 2010 से आँखों के ऐसे चैकअप कैम्पों का आयोजन कर रही है। अब तक सेवा भारती ने चार चैकअप कैंपों का क्रमशः 25 अप्रैल 2010, 27नवंबर 2013 एवं 30 नवंबर 2014 को सफलता पूर्वक आयोजन किया। इन कैंपों में भारी संख्या में बस्तियों, कलोनियों के लोगों ने लाभ उठाया। गत कैम्प जो 30 नवंबर 2014 को लगाया गया था, में कुल 942 मरीज़ों ने लाभ उठाया था। उन सभी को मुफ्त दवाइयां दी गई थी और 160 मरीज़ों को मुफ़्त ऐनकें दी गई थी। जिनको आँखों के आप्रेशन की सलाह दी गई, उनके बाद में सिविल अस्पताल पंचकूला में मुफ़्त ऑप्रेशन किए गए।

गत वर्षों के अनुभव के दृष्टिगत इस वर्ष सिविल अस्पताल पंचकूला के सहयोग से 25 अक्तूबर 2015 को कैम्प का आयोजन किया गया। जिसमें डा॰ उमेश मोदी, एमएस ;ऑरथोद्ध, डॉ. जगदीप सिंह एमएस ;आंखद्ध और डॉ. सुखदीप कौर एम. एस. ;इएनटीद्धतथा उनकी टीम ने सेवाएं दीं। इसके अतिरिक्त सिविल अस्पताल मनीमाजरा ;चंडीगढ़द्धके डा॰ रमन गुप्ता एम.एस. ;ऑरथोद्ध ने भी अपनी सेवाएं दी। डॉ॰ रमन गुप्ता ने बोन डेंसिटी टैस्ट के लिए आवश्यक मशीन एवं टैक्नीशियन का भी प्रबंध करवाया। जिसके लिए सेवा भारती आभार प्रगट करती है। इस पाँचवे चैकअप कैम्प का शुभारंभ श्री सरण दास काम्बोज मुख्य अतिथि द्वारा भारत माता के चित्र पर माल्यार्पण तथा सर्वश्री कपूर चन्द अग्रवाल, प्रधान सेवा भारती, पंचकूला, श्री राममूर्ति वर्मा, प्रधान माधव समिति के दीप प्रज्जवलन से हुआ। प्रथा अनुसार गायत्री-मन्त्र का तीन बार पाठ किया गया। तत्पश्चात् सेवा भारती पंचकूला द्वारा गांव बुढनपुर,फतेहपुर तथा आशियाना

अपार्टमेंट्स सैक्टर-20 पंचकूला में चलाए जा रहे बाल संस्कार केंद्रों के बच्चों ने वन्दना तथा देश भक्ति के गीत प्रस्तुत किए, जिनका अतिथियों ने कर्तल ध्वनि से स्वागत किया। तत्पश्चात श्री एम. एन. मेहरा सचिव ने सेवा भारती के उद्देश्य और देश भर में चल रहे सेवा भारती के कार्यक्रमों के बारे में संक्षिप्त चर्चा की।

इस कैम्प को शानदार सफलता प्राप्त हुई, क्योंकि इस बार पंचकूला के गांवों, बस्तियों, और कलोनियों से ज़्यादातर लोगों ने लाभ उठाया। कैम्प में 753 रोगियों की जांच की गई। जिसमें 428 रोगी आँखों से सम्बन्धित रोगों से ग्रस्त थे। 242 रोगी हड्डी एवं जोड़ रोग तथा 83 रोगी नाक, कान, गला ;इएनटीद्ध से ग्रस्त थे। 153 मरीज़ों को मुफ़्त चश्में दिए गए। 23 मरीज़ कैटरेक्ट आप्रेशन के लिए चुने गए। मरीज़ों को इसके लिए सिविल अस्पताल, पंचकूला से बुधवार को संपर्क करने के लिए कहा गया। आवश्यक जांच टैस्ट के बाद आप्रेशन सिविल अस्पताल में मुफ्त किए जाएगें। कैम्प में मुख्य अतिथि, सभी डाक्टर, टैक्नीशियन तथा श्री माधव मन्दिर सैक्टर-4 पंचकूला प्रधान सर्वश्री टी. आर. शर्मा, समाजसेवी आर. आर.बेद, एन. के.नरूला श्रीमती राजरानी शर्मा तथा राणा मैडीकोज़ एवं स्टेट बैंक ऑफ पटियाला के शाखा प्रबंधक श्री ए. के. गुप्ता को उनके आर्थिक सहयोग के लिए मोमेंटो देकर एवं माल्यार्पण से सम्मानित किया गया। कैम्प में सभी मरीज़ों, डाक्टरों, अतिथियों और बच्चों के लिए जलपान की व्यवस्था थी।

सेवा भारती माधव समिति, पंचकूला सभी समाजसेवियों, दानी सज्जनों, के आर्थिक सहयोग और विशेषकर सभी डाक्टर और टैक्नीशियन की आभारी है, जिनके सहयोग के कारण कैम्प सफलतापूर्वक चलाया जा सके। सेवा भारती अपने सभी सदस्यों कार्यकर्ताओं के प्रति आभार प्रकट करती है, जिन्होंने लगातार रात दिन काम करके कैम्प को सफल बनाया। कैम्प में सर्वश्री कपूर चंद अग्रवाल, प्रधान सेवा भारती पंचकूला, जे.के.मागो, श्रीमती उर्मिल गुप्ता, र ा म म ू ि त र् व म ा र् , प ्र ध ा न माधव समिति, एम. एन. मेहरा सचिव, सदस्य बी. आर. रावल, एन. के. नरूला, सुभाष पपनेजा, आर. के. बहल,पी.सी.मितल,के. के. सेठ, के.एल. सेठी,साधु राम वर्मा, डी. एल. मनचंदा, शेर सिंह, कमल गोयल, एम. एल.आहूजा, सुशील चोपड़ा, भारत भूषण, सतीश जी, गौरव गुप्ता, दीपक ठकराल, अजय गुप्ता, शिल्पी गुप्ता, राजीव गर्ग आदि उपस्थित थे। कैम्प में श्री राधा माधव मन्दिर सैक्टर-4 पंचकूला के प्रधान दिवगंत श्री एम. एस. कौशल की अनुपस्थिति सबको खल रही थी। उनका सेवा भारती को दिया गया योगदान भुलाया नहीं जा सकता। सेवा भारती इस पुण्य आत्मा को अपने श्र(ा सुमन अर्पित करती है।

प्रति वर्ष बाल संस्कार केंद्रों के छात्र्छात्रओं को स्वेटर वितरित किये जाते हैं। इस वर्ष भी बाल संस्कार केंद्र मौली जागरां फतेहपुर, बुडनपुर, आशियाना अपार्टमेंट्स सैक्टर 20 तथा आर्दश निकेतन, श्री राधा माधव

मंदिर, सैक्टर-4 के 180 छात्र-छात्रओं को स्वैटर वितरित किये गए। जिस पर लगभग 25000 रुपए की राशि व्यय की गई। सेवा भारती के प्रयास से बस्तियों, झुग्गी-झौपड़ी तथा गांव के गरीब बच्चों को सर्दी से राहत तो मिलती ही है, इससे वह बाल संस्कार केंद्रो में शिक्षा, संस्कार ग्रहण करने की ओर भी आकर्षित होते हैं।

इस वर्ष स्वैटर वितरण के लिए समारोह 04 दिसम्बर 2015 को श्री राधा माधव मन्दिर सैक्टर-4 में आयोजित किया गया, जिसकी मुख्य अतिथि श्रीमति राजरानी शर्मा समाज सेवी थी। समारोह का शुभारंभ भारत माता के चित्र पर माल्यार्पण और दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। तत्पश्चात, गायत्री-मंत्र का तीन बार पाठ किया गया। बाल संस्कार केंद्रों तथा मंदिर के छात्र-छात्रओं द्वारा देश भक्ति के गीत एवं सरस्वती वंदना प्रस्तुत की गई। समारोह में स्वेटरों का वितरण श्रीमति राजरानी शर्मा के अतिरिक्त मंदिर के प्रधान सर्वश्री टी.आर. शर्मा, कपूर चंद अग्रवाल, प्रधान सेवा भारती पंचकूला, राममूर्ति वर्मा प्रधान, एम.एन.मेहरा, सचिव माधव समिति, श्रीमति उर्मिर्ल गुप्ता उपप्रधान, सदस्य जे. के. मागो, ए. के. भाटिया, श्री साधुराम वर्मा, शेर सिंह, आर. के. बहल, एम. एल. आहूजा, पृथ्वी राज चोपड़ा द्वारा किया गया। समाजसेवी श्रीमति उषा गोयल, महिला संकीर्तन मंडल सैक्टर 16, श्रीमति एवं श्री सुशील चोपड़ा तथा श्री वी. के. सेठ जो सेवा भारती के प्रकल्पों को चलाने तथा अन्य योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए समय-समय पर आर्थिक सहयोग देते रहे हैं, को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। बाल संस्कार केंद्रों की अध्यापिकाओं को शॉल भेंट की गई। इसके अतिरिक्त सेवा केंद्रों तथा मंदिर के छात्र, छात्रओं, समारोह में आये सभी गणमान्य महानुभावों, अध्यापिकाओं के लिए चाय, जलपान की व्यवस्था थी। समारोह का समापन शांतिपाठ से हुआ। **-एम. एन.मेहरा, सचिव**

लघु कथा - पलथनी

आज जब वे मंदिर से लोटे,तभी फटे चीथड़ों से लिपटा एककृ॥शकाय लड़का, जिसकी उम्र बमुश्किल सात-आठ साल रही होगी,याचनापूर्ण स्वर में उनसे खाने के लिए कुछ मांगने लगा।'काम धाम कुछ करते नहीं, पैदा होते ही भीख मांगने का हुनर सीख लेते हो।' उसने दुत्कार दिया। घर में दाखिल होते ही पत्नी ने उनको दो रोटियां थमाते हुए कहा, 'यह पहली रोटी गोमाता के लिए और दूसरी पलथनी ;आखिरीद्ध रोटी कुते के लिए।'गाय सामने खड़ी थी उसके माथे पर हाथ फेरते हुए रोटी खिला दी। कुत्ता कुछ दूर था, उसे पुचकार कर बुलाते हुए रोटी ज़मीन पर रख दी। अचानक वही लड़का दौड़कर आया और रोटी उठाकर भाग गया। कुत्ता उस व्यक्ति की ओर देखकर ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगा।**-डॉ.ज्योति श्रीवास्तव**

यह कविता पढ़कर मुझे एक पुरानी घटना याद आ गई। 50 के दशक में मैं कॉलेज में पढ़ता था। हमने प्राध्यापकों के साथ मिलकर एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया था। उस आयोजन में पर्ची निकालकर विषय दिया जाना था। प्रतियोगी तुरन्त उस पर अपने विचार प्रकट करने शुरू कर देता था। पहला प्रतियोगी मंच पर आया! पर्ची निकालकर उनके हाथ पर रख दी। पर्ची उसने खोली, पढ़ी, उसकी आँखों से टप-टप अश्रु बहने लगे। सभी श्रोता हत्प्रभ! उसने अपने को सम्भाला और बोला, विषय है- मेरा बाप, फिर रुका, कुछ क्षण बाद बोला-एक मास पूर्व मेरे पिता का निधन हो गया था, मेरा पिता एक आदर्श व्यक्ति थे... 7 मिनट तक धारा प्रवाह बोला। परिणाम! उसे बारह प्रतियोगियों में प्रथम घोषित किया गया। -सम्पादक

पिता जीवन है, सम्बल है, शक्ति है,
पिता शक्ति के निर्माण की अभिव्यक्ति है।
पिता अंगुली पकड़े बच्चे का सहारा है,
पिता कभी कुछ खट्टा, कभी खारा है।
पिता पालन-पोषण है, परिवार का अनुशासन है,
पिता घर में चलने वाला प्रेम का प्रशासन है,
पिता रोटी है, कपड़ा है और मकान है,
पिता छोटे से परिंदे का बड़ा आसमान है।
पिता अप्रदर्शित अनन्त प्यार है,
पिता है तो बच्चों को उसका इन्तज़ार है।
पिता है तो बच्चों के ढेर सारे सपने हैं,
पिता है तो बाज़ार में सब खिलौने अपने हैं।
पिता से ही माँ की बिन्दी और सुहाग है,
पिता गृहस्थ में उच्च स्थिति की भक्ति है।
पिता इच्छाओं का दमन, परिवार की पूर्ति है,
पिता बच्चे को मिले संस्कारों की मूर्ति है।
पिता एक जीवन को जीवन का दान है,
पिता दुनिया दिखाने का एक अहसान है।
पिता सुरक्षा है, अगर सर पर उसका हाथ है,
पिता नहीं तो बचपन अनाथ है, अनाथ है।
पिता से भी बड़ा, तुम अपना नाम करो,
पिता का अपमान नहीं, उन पर अभिमान करो।
माँ बाप की कमी को कोई पाट नहीं सकता,
ईश्वर भी उनके आशीषों को काट नहीं सकता।
विश्व में किसी भी ईश्वर का स्थान दूजा है,
माँ-बाप की सेवा ही सबसे बड़ी पूजा है।
विश्व में किसी भी तीर्थ की यात्राएँ व्यर्थ हैं,
यदि बेटे के होते हुए माँ-बाप असमर्थ हैं।
वो खुशनसीब हैं, माँ-बाप जिनके साथ होते हैं,
क्योंकि माँ-बाप के आशीषों के हज़ारों हाथ होते हैं।

क्योंकि माँ-बाप के आशीषों के हज़ारों हाथ होते हैं। -कपिल अत्रेजा

सेवा भारती, गुरूग्राम

झाड़सा गाँव में एक नए बाल संस्कार केन्द्र का प्रारम्भ किया गया। इस केन्द्र के लिए आँगनवाड़ी में स्थान दिलवाने में झाड़सा के पार्षद् ने सेवा भारती की सहायता की। केन्द्र के उद्घाटन के समय गुड़गाँव ज़िले के सभी कार्यकर्ताओं के साथ प्रांतीय अध्यक्ष डॉ॰ बु(सिंह तथा श्रीमती रेनू पाठक सहसचिव राष्ट्रीय सेवा भारती भी उपस्थित रहीं। उद्घाटन के अवसर पर गाँव की महिलाओं तथा कार्यकर्ताओं ने बच्चों के साथ मिलकर कीर्तन किया। गाँव की महिलाओं ने हरियाणवी भाषा में भजन गाया तथा बहन रेणु पाठक ने भी मनमोहक भजन गाया। प्रसाद वितरण के पश्चात सभी बच्चों को बहन रेणु पाठक ने पढ़ने लिखने का सामान भेंट किया। इस केन्द्र में ज़्यादातर वंचित परिवारों के बच्चे आ रहे हैं।

गुड़गाँव ज़िले में प्रतिवर्ष वैश्य महासम्मेलन की ओर से तीज मेले का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष इस तीज मेले में नृत्य प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया था। इस नृत्य प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए श्रीमती रितु गोयल सहसचिव सेवा भारती गुरूग्राम ने केन्द्रों पर सिलाई की शिक्षा ग्रहण कर रही लड़कियों को प्रेरित किया। श्रीमती रितु गोयल व शिक्षिका शर्मीला देवी तथा लड़कियों के अनथक प्रयासों से तीज मेले की नृत्य प्रतियोगिता में सेवा भारती की बहिनों ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। श्रीमती कविता जैन मंत्री हरियाणा सरकार के कर कमलों से प्रतियोगिता में प्रथम स्थान की ट्रोफी प्राप्त की।

सेवा भारती के पानीपत में चल रहे 27 प्रकल्प

माता चन्द्रकान्ता स्मृति सेवा न्यास के तत्त्वावधान में सेवा भारती संचालित ज्ञानदीप सेवाधाम के साथ वार्षिक उत्सव का आयोजन मुलतान भवन, माडल टाउन में किया गया। श्री कपिल खन्ना व उनकी पत्नी हवन-यज्ञ में मुख्य यजमान रहे। मंच संचालन सुरेश रावल ने किया। कार्यक्रम अध्यक्ष श्री प्रमोद विज, मुख्य अतिथि डॉ॰ इन्द्रजीत सिंह धनखड़, विशिष्ट अतिथि डा. बलवान सिंह व मुख्य वक्ता डा. बुध सिंह प्रांतीय अध्यक्ष का सेवा भारती के सदस्यों द्वारा माला डालकर स्वागत किया गया। सभी अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। ज्ञानद्वीप सेवाधाम के बच्चों ने बहुत सुन्दर प्रस्तुति देकर सबका मन मोह लिया। देश

भक्ति के गीत, 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ', प्रभु भक्ति गीत, हरियाणवी नृत्य ने खूब तालियाँ बटोरी। सेवा भारती के ज़िला अध्यक्ष डा. यशदेव त्यागी ने सेवा भारती पानीपत में चल रहे प्रकल्पों की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि हरियाणा में चार सौ साठ सेवा कार्य चलाये जा रहे हैं, जबकि पूरे भारतवर्ष में पौने दो लाख प्रकल्प चलाये जा रहे हैं। पानीपत ज़िले में 27 प्रकल्प चल रहे हैं। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सिविल सर्जन डॉ. इन्द्रजीत सिंह धनखड़ ने अपने सम्बोधन में कहा, कि भारत की उन्नति व प्रगति का ये उचित समय है। कार्यक्रम में मुख्य रूप से सर्वश्री रमेश नांगरू, वीरेन्द्र गुप्ता, शिव कुमार मित्तल एडवोकेट, सन्तलाल, बलराम नन्दवानी, राजेश गोयल, अनूप, नरेन्द्र, एम.एल. शाही, अशोक नांरग, जवहार लाल शर्मा, दयालू अरोड़ा, आनन्द शरण व सुरेन्द्र शर्मा आदि मौजूद रहे। **-ओम प्रकाश आर्य**

सेवा भारती, करनाल

श्री प्रवीन गुलाटी संघ के व्यवस्था प्रमुख करनाल ने अपने पोते आरव गुलाटी का पहला जन्मोत्सव सेवा भारती मंगल कालोनी के बाल संस्कार केन्द्र पर वहाँ उपस्थित 30 बच्चों के साथ मनाया। योजनानुसार श्री प्रवीन गुलाटी जी अपने परिवार के साथ दोपहर 1-00 बजे केन्द्र पर पहुँच गए। उन्होंने आते ही अपने पोते आरव को बच्चों के बीच में बिठा दिया। जन्मदिन मुबारक की गूँज से आरव का मन मोह लिया। तत्पश्चात आरव की माता श्री निवेदिता गुलाटी, दादी श्रीमती सुमन गुलाटी, मौसी कु. नेहा भी बच्चों के बीच बैठ गई। बच्चों ने गायत्री-मन्त्र, प्रातः स्मरणीय मंत्र, सरस्वती वन्दना, वन्दना के गीत सुनाए। मामा श्री प्रिन्स और पिता श्री आदित्य गुलाटी ने इसका भरपूर आनन्द लिया। दादा श्री प्रवीन गुलाटी जी की बातचीत से बच्चे बहुत हर्षित हुए। गुलाटी परिवार सबके लिए भोजन घर से स्वयं अपने हाथों से घर की ही रसोई से बनाकर लाए थे। आरव की नानी, मौसी, दादी सबने मिलकर बच्चों को स्वादिष्ट व्यंजन परोसे। इस कार्यक्रम में श्रीमती एवं श्री अमरलाल परूथी ज़िलाध्यक्ष, सर्वश्री हरि॥ष्ण नांरग ज़िला सचिव, प्रेम कुमार खरबन्दा नगर सचिव, ओमप्रकाश वध ावा ज़िला सेवा प्रमुख उपस्थित थे। श्री शक्ति पासवान मंगल कालोनी जो पहले बाल संस्कार केन्द्र, फिर टेपला स्कूल से दसवीं पास करने के बाद अब नीलोखेड़ी पालिटैक्निक से में पढ़ रहा है, ने व्यवस्था में पूरा सहयोग किया।

2. स्वर्गीय श्री वीरभान अरोड़ा पूर्व नगर अध्यक्ष के सुपुत्रें ने 8-11-2015 को मॉडल टाऊन बाल्मीकि बस्ती में निःशुल्क आर्युवैदिक चिकित्सालय को निःशुल्क दवाईयों की पूर्ति का संकल्प लेकर समस्त दवाईयाँ उपलब्ध करवाई तथा भविष्य में भी देते रहेंगे। श्रीमति रेनू बाला मेयर नगर निगम करनाल द्वारा उद्घाटन किया गया। निःशुल्क सेवाएँ डॉ. ओ. पी. नारंग से.नि. वरिष्ठ आर्युवैदिक चिकित्सक दे रहे हैं। चिकित्सालय का स्थान बाल्मीकि मन्दिर परिसर में बाल्मीकि सभा ने निःशुल्क प्रदान किया। यह दोनो कार्य करनाल सेवा भारती के लिए उत्साहवर्धक हैं। इस अवसर पर स्वर्गीय श्री वीरभान अरोड़ा का परिवार, सेवा भारती परिवार, डॉ॰ ओ॰पी॰ नारंग वाल्मीकि बस्ती के बहनें-भाई उपस्थित रहे।

-हरि ॥ष्ण नांरग, ज़िला सचिव

सेवा भारती, भिवानी

महार्षि वाल्मीकि भगवान का प्रकटोत्सव 25 अक्तूबर 2015 को शिवनगर में स्थित सिंघानिया धर्मशाला में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में संख्या लगभग चार सौ थी। 20 केन्द्वों के 280 बच्चों सहित अन्य गणमान्य लोगों ने भाग लिया। मुख्य अतिथि महिला हाईकेम की अध्यक्ष श्रीमति सुजाता शारदा थी। श्री करनैल बागड़ी जी ने अध्यक्षता की, विशिष्ट अतिथि समाजसेवी श्री देवराज थे। मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भिवानी विभाग के कार्यवाह श्री प्रदीप कुमार जी थे। समारोह में सेवा बस्तियों में चल रहे प्रकल्पों के बच्चों द्वारा उत्साहपूर्वक सांस्॥तिक कार्यक्रम व देशभक्ति के शानदार गीतों की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि श्रीमती सुजाता शारदा, श्री करनैल बागड़ी, श्री देवराज, प्रदीप, सारिका कोकड़ा ने महार्षि वाल्मीकि जी के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित करके किया। सुजाता जी ने अपने सम्बोधन में महार्षि जी के जीवन पर सरल और सारगर्भित विचारों में कहा, कि तपस्या के बल से आदिग्रन्थ रामायण की रचना राष्ट्र के लिए अमर धरोहर के रूप में की। समाज को जीवन में श्रम के महत्व को आत्मसात कर जीवन जीने की समृ(कला विकसित करनी चाहिए। नर सेवा, नारायण सेवा ईश्वरीय कार्य है। हाईकेम, समाज के वंचित समूहों के बीच रहकर सदस्यों के साथ सामाजिक परिवर्तन हेतू कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा, कि हाईकेम के सहयोग से चार केन्द्व और एक बच्चों का क्रेच सेवा भारती के द्वारा चलाये जा रहे हैं। भविष्य

में भी क्लब ज़रूरतमंदों की इसी तरह सेवा में सहयोग का संकल्प पूरा करेगी। श्री देवराज ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा, कि शिक्षित और संगठित समाज ही सक्षम बनकर राष्ट्र के सहयोग में अपना पूर्ण योगदान दे सकता है। श्री करनैल बागड़ी ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा, कि समाज को शिक्षा के साथ सद्संस्कार समय की ज़रूरत है। परिवार समाज और राष्ट्र की प्रगति के लिए नौजवान श्रम करके राष्ट्र निर्माण करें। सेवा भारती भिवानी इस कार्य में समाज के साथ दुःख-सुख में खड़ी नज़र आती है। श्री प्रदीप जी ने अपने बौि(क में कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ 90 वर्षों से राष्ट्र की एकता और अखण्डता की रक्षा हेतू समाज की सेवा कर रहा है। संघ के अन्य आयामों के साथ सेवा विभाग से समबन्धित संगठनों द्वारा हरियाणा में 395 स्थानों पर 834 सेवा कार्य तथा सेवा भारती द्वारा 52 स्थानों पर 375 सेवा कार्य चल रहे हैं। भिवानी नगर में 18 बाल संस्कार तथा 5 सिलाई प्रकल्प कुल 23 सेवा प्रकल्प चल रहे है। उन्होंने कहा कि सेवा भारती हरियाणा 1980 से सामाजिक व आर्थिक रूप से पिछड़े बन्धुओं के बीच निःस्वार्थ भाव से समरसता निर्माण कर रही है। उन्होंनें समाज के युवाओं से अपील करते हुए कहा कि उनमें अपार शक्ति है। शक्ति का जागरण कर अपनी शक्ति को पहचानकर सही दिशा में चलने की आवश्यकता है। इस अवसर पर श्री कैलाश चन्द्र मित्तल की तरफ से वर्तमान केन्द्रों के अतिरिक्त अपनी पौत्र वधु 'स्व॰ श्रुति मित्तल की स्मृति में 10 नए सेवा प्रकल्पों को आर्थिक सहयोग की घोषणा की, इसके अतिरिक्त 27अक्तूबर को सेवा भारती के कार्यकर्ताओं ने प्रकटोत्सव जुलूस में भाग लिया। नगर में स्वागत द्वार बनाकर सेवा केन्द्रों की अध्यापिकाओं व बच्चों ने शोभा यात्र पर पुष्प वर्षा की और प्रसाद वितरण किया। कार्यक्रम में माननीय अतिथियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। अतिथियों द्वारा सभी प्रतिभागियों को पुरस्कार देकर उत्साह वर्धन किया। मंच संचालन महिला समिति अध्यक्ष श्रीमति सुषमा शर्मा ने किया। श्री प्रहलादराय सोलंकी द्वारा माननीय अतिथियों व गणमान्य महानुभावों का हृदय से आभार व्यक्त किया। सर्वश्री रामनिवास, अनिल शर्मा, केन्द्रमणी सरोहा, लीला जी, पुरुषोतम जी, अनिल सज्जन, खनगवाल, सारिका कोकड़ा, ललित सिंघल उपस्थित थे।

हनुमान गेट पर सेवा भारती द्वारा चलाए जा रहे प्रकल्पों के बच्चों

द्वारा कार्यक्रम आयोजित किया गया। बच्चों द्वारा 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' पर आधारित लघु नाटिका प्रस्तुत कर प्रेम व मानवीय संवेदना का सन्देश दिया। इस कार्यक्रम में समाज के वरिष्ठ अभिभावक श्री सोहनलाल ने कहा कि बेटी ही संसार है, संसार ही सत्य है, सत्य की रक्षा के लिए हमें भ्रूण हत्या जैसे पाप कुकर्मों के विचारों से दूर रहना चाहिए। बेटियों को पढ़ाकर उनके सम्मान की रक्षा करनी चाहिए। प्यार व एकता से समाज में आपसी तालमेल ज़रूरी है। यदि ज़िन्दगी में दोनों चीज़ों का अभाव है तो जीवन बेकार है। उनहोंने कहा कि समाज में व्याप्त भ्रूण हत्या, पर्यावरण असंतुलन, नशाख़ोरी, जैसी समस्याओं के सुलझाने के लिए सरकार के साथ-साथ समाज को भी सामूहिक रूप से प्रयास करना होगा। इस अवसर पर पाँच केन्द्रों के नब्बे बच्चों ने भाग लिया। बस्ती के गणमान्य व्यक्तियों के अतिरिक्त अनिल, रमेश, अशोक, लीला, सुनील कुमारी व सुमित उपस्थित रहे।

बाबा साहेब अंबेडकर पर सिक्कों का विमोचन : प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने डॉ॰ बी.आर. अम्बेडकर को 6 दिसम्बर, 2015 को भावपूर्ण स्मरण किया। उन्होंने कहा कि सामाजिक न्याय के प्रति उनके योगदान को भारत कभी नहीं भूल सकता। लेकिन उनके राजनैतिक व आर्थिक विचारों एवं दृष्टिकोण को पूरी तरह नहीं समझा गया, जबकि वर्तमान परिवेश में इसकी सराहना होनी चाहिए। वे संविधान के निर्माता के रूप में जाने जाते हैं और स्वतंत्र भारत के पहले कानून मंत्री थे। उन्हें 1990 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया। प्रधानमन्त्री ने 125वें जयंती वर्ष समारोह पर उनकी स्मृति में महापरिनिर्वाण दिवस पर 100 रुपये और 125 रुपये के दो सिक्के जारी किए। उन्होंने आह्वान किया, कि देश में डॉ॰ अम्बेडकर और उनके द्वारा बनाए गए भारत के संविधान की प्रतिवर्ष 26 नवम्बर को संविधान-दिवस के रूप में मनाकर सामाजिक समरसता व सामाजिक न्याय के वातावरण को बनाने में योगदान दें। **-प्रहलाद राय सोलंकी**, प्रांत उपाध्यक्ष

किशोर क्रान्तिकारी

स्वतंत्रता सेनानियों और क्रांतिकारियों के संघर्ष और बलिदान के कारण 15 अगस्त, 1947 को देश को आज़ादी मिली। कई सेनानी किशोरावस्था में ही आज़ादी के आंदोलन में कूद पड़े और बेहद कम उम्र में शहीद हो गए।

1. खुदीराम बोस का जन्म बंगाल के मिदनापुर ज़िले में हुआ था। वे

मुज़फ़्फ़रपुर में बम फैंकने की एक घटना में शमिल थे, जिसमें दो अंग्रेज़ महिलाएं मारी गई थी। उन्हें 11 अगस्त 1908 को सिर्फ 18 साल की उम्र में फांसी दे दी गई थी।

2. हेमू कलाणी का जन्म 23 मार्च 1923 को सिंध ;अब पाकिस्तानद्ध में हुआ था। कालाणी बचपन से स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े थे। उन्हें रेल पटरी से छेड़छाड़कर एक ट्रेन को पटरी से गिराने ;जिसमें अंग्रेज़ सैन्य अधिकारी जा रहे थेद्ध के कारण 19 वर्ष की उम्र में 21 जनवरी 1943 को फांसी दी गई।

3. बटुकेश्वर दत्त का जन्म बंगाल के वर्धमान ज़िले के ओवरी गांव में 18 नवंबर 1910 को हुआ था। वह भगत सिंह के साथ 8 अप्रैल 1929 को दिल्ली की सैंट्रल एसेंबली में बम फैंकने की ऐतिहासिक घटना में शामिल थे। तब वह महज 18 साल के थे। बाद में उन्होंने जेल में भूख हड़ताल की।

4. क्रांतिकारी यतीन्द्रनाथ दास का जन्म 27 अक्टूबर 1904 को हुआ था। वह महज17 साल की उम्र में असहयोग आन्दोलन में कूद पड़े थे। लाहौर जेल में बंद रहने के दौरान भारतीय कैदियों के साथ समान व्यवहार की मांग को लेकर भूख हड़ताल करने से 13 सितम्बर 1929 को 69 दिन के बाद उनकी मौत हो गई थी।

5. महाराष्ट्र के नासिक जिले में 1892 में जन्मे अनंत लक्ष्मण कान्हेरे ने 21 दिसंबर 1909 को नासिक के अंग्रेज़ कलेक्टर जैक्सन की गोली मारकर हत्या कर दी थी। कान्हेरे महज़ 17 साल के थे। गणेश दामोदर सावरकर को आजीवन कारावास की सजा दिलाने में जैक्सन की प्रमुख भूमिका थी। कान्हेरे को 19 अप्रैल 1910 को फांसी दे दी गई।

6. प्रफुल्ल चाकी का जन्म 10 दिसंबर 1888 को बंगाल के बोगरा ज़िले में बिहारी गांव में हुआ था। वह नोवीं कक्षा में पढ़ते थे, तभी एक प्रदर्शन **में** शामिल होने उन्हें स्कूल से बाहर कर दिया गया। मुज़फ़्फ़रपुर के मजिस्ट्रेट किंग्सफ़ोर्ड की हत्या की योजना में खुदीराम के साथ प्रफुल्ल चाकी भी शामिल थे।

करतार सिंह सराबा, अशफ़ाक उल्लाह खान, सरदार भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव, उधम सिंह, मदनलाल ढींगड़ा जैसे अनेक क्रान्तिकारियों के बलिदान से देश को आज़ादी मिली।

सहिष्णुता के पैरोकारों के नाम

कुछ समय से देश के कुछ लेखक? सहित्यकार? फिल्मों से जुड़े

विद्वान? कुछ इतिहासकार? देश में तथाकथित बढ़ रही असहिष्णुता की चिन्ता करते हुए साहित्य अकादमी एवं अन्य संस्थाओं व सरकार से मिले अवार्ड्स को लौटा रहे थे। देश के प्रत्येक नागरिक का चाहे वह किसी भी पेशे से जुड़ा हो, देश के हालात से पीड़ित चिंतित होना स्वभाविक है, उसके लिए उन्हें अपनी आवाज़ उठानी चाहिये। परन्तु यह समझ में नहीं आता, कि इस समय कौन से ऐसे आपात्कालीन हालात बन गये थे, जिससे देश का माहौल ऐसा भयावह बन गया, कि इन बु(जीवियों? को आवार्ड्ज़ लौटाने जैसा कदम उठाने पर विविश होना पड़ा। देश के एक हिस्से में एक दुःखदायी घटना- जिससे एक व्यक्ति की जान चली गई, अथवा कुछ राजनैतिज्ञों के ग़ैर ज़िम्मेदाराना ब्यानों से देश की गंगा-जमुनी तहज़ीब को ख़तरा हो जाये, ऐसा इस महान देश में होने वाला नहीं है और न ही अवार्ड्ज़ लौटाना इस समस्या का कोई हल है, जब कि इससे पूर्व बड़ी आपादायें आने पर ऐसा कुछ नहीं हुआ।

फिर भी पुरस्कार लौटाने वाले बु(जीवी समझते हैं, कि असहिष्णुता इतनी बढ़ गयी है, हालात इतने बिगड़ गये हैं, कि पुरस्कार लौटाना ही एक मात्र विकल्प रह गया था, तो उनसे यह पूछना बनता है, कि उनकी संवेदनशीलता उस समय कहां मर गयी थी, जब इससे पूर्व देश में कहीं बढ़कर असहिष्णुतापूर्वक अत्याचार हुए, काश्मीर घाटी में पंडितों के साथ बर्बरता का नंगा नाच हुआ, उनकी बहु -बेटियों की इज़्ज़त लूटी जा रही थी, उनको अपनी ज़मीन जायदाद से बेदख़ल किया जा रहा था और मज़बूर होकर उन्हें घर-बार छोड़कर पलायन करना पड़ा था। आज तक हज़ारों पंडित परिवार अपने ही देश में शरणार्थी बन कर रहे हैं। तब किसी ने पुरस्कार लौटाना तो दूर, उनके अविवरणीय कष्टों व दुःख-दर्द पर दो शब्द बोलना भी ज़रूरी नहीं समझा गया। आज भी हज़ारों परिवार गुरबत की ज़िन्दगी जी रहे हैं, परन्तु उनकी सुध लेने वाला कोई नहीं। इन तथाकथित बु(जीवियों ने आवाज़ उठाना ज़रूरी नहीं समझा। 1984 में पूर्व प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या पर राजधानी दिल्ली तथा देश के अन्य शहरों में लगभग 4,000 सिक्खों का कत्लेआम किया गया। तब के युवा प्रधानमन्त्री ने यह कहकर उस भयानक दुर्घटनाओं का मज़ाक उड़ाया था, कि जब कोई बड़ा वृक्ष गिरता है तो धरती हिलती ही है। उन दिनों में उन पर जो जुल्म ढाये गये, उनके गले में टायर डालकर उन्हें ज़िन्दा जलाया गया, सभी संवेदनशील व्यक्तियों के

दिल दहल गये थे। पर इन बु(जीवियों को उस समय सब सामान्य सा लगा, तब उन्हें अपने पुरस्कार लौटाने की आवश्यकता महसूस नहीं हुई। इस सहिष्णुता के पैरोकारों का ज़मीर उस समय नहीं जागा, जब केन्द्र में शासन करने वाली पार्टी द्वारा प्रेषित संत भिंड़रांवाले के वर्चस्व के दिनों में हिन्दुओं को बसों से निकाल-निकाल कर गोलियों से भून दिया जाता था और वे मजबूर होकर पंजाब से पलायन करने पर विवश हुए, तब भी इस सहिष्णुता के पैरोकारों का ज़मीर नहीं जागा।

अपने देश में हुई दारुण, हृदय विदारक असहिष्णुता की पराकाष्टा की घटनाओं के समय के साथ-साथ पड़ोसी देश-पाकिस्तान और बंगलादेश में हिन्दू अल्पसंख्यकों पर जो अत्याचार हुये, और हो रहे हैं, उनके धर्मस्थलों को तोड़ा जाता है, और उनकी बहू-बेटियों का बलात्कार होता है, उन्हें पाकिस्तान और बंगलादेश छोड़कर भारत में शरण लेने हेतू पलायन करना पड़ता है, तब यह बु(जीवी? असंवेदनहीन बनकर तमाशा देखते रहते हैं।

अच्छा यह होता है, कि ये बु(जीवी? ऐसा नाटक करने, देश और वर्तमान सरकार को बदनाम करने के स्थान पर अपनी चिंता सांझा करने हेतू देश के प्रधानमन्त्री से मिलते और देश में यदि कोई असहिष्णुता की घटना से विचलित हुआ है, तो इसका समाधान मिलकर ढूंढते, ताकि देश में भाईचारा, सोहर्द और आपसी प्यार, जो सदियों से चला आ रहा है, में किसी प्रकार से कोई घात न लगा सके, क्योंकि देश और देशवासियों का आपसी भाईचारा, सहिष्णुता ही सब के लिए सर्वोपरि है और रहनी चाहिये। **-एम.एन.मेहरा, पंचकूला**

कार्यकर्ता अभ्यास वर्ग

5-6 दिसम्बर को करनाल प्रान्त कार्यालय में 30 घण्टे के लिए कार्यकर्ताओं के अभ्यास वर्ग का प्रान्त महासचिव श्री नरेश कुमार जी की देखरेख में आयोजन किया गया। इस वर्ग में हरियाणा के 17 ज़िलों से 42 प्रमुख कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। प्रदेश अध्यक्ष डॉ. बु(सिंह जी तथा प्रान्त सेवा प्रमुख श्री कृष्ण कुमार जी पूरा समय इस वर्ग में रहे। राष्ट्रीय सेवा भारती के

जो सच्चा हिन्दू है, सच्चा भारतीय है, 'भारत माता की जय' बोलता है, 'वन्दे मातरम्' सच्चे मन से कहता है, वही सच्चे मन से पंथ निरपेक्ष है। बाकी सब धोखेबाज़, झूठे, सत्तालोलुप हैं। -सम्पादक

अखिल भारतीय महासचिव)षिपाल जी डडवाल ने 6 दिसम्बर को विभिन्न विषयों पर कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन किया। उन्होंने पूरे देश में सेवा भारती के विभिन्न विशिष्ट प्रकल्पों में कार्यकर्ताओं के कार्य करने की प(ति पर प्रकाश डाला। दानदाताओं से अपना व्यवहार, उससे प्राप्त धन की व्यवस्था तथा उसके व्यय ;अर्थ प्रबन्धनद्ध करने के तरीकों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा अपनी सेवा भारती का कार्यकर्ता आमतौर पर ईमानदार ही होता है, परन्तु उसकी ईमानदारी काम करते हुए दिखाई भी देनी चाहिए। एक सत्र में डॉ. बु(सिंह जी ने अपने प्रान्त में कार्य विस्तार की आवश्यकता पर बोलते हुए कहा कि आज समय अनुकूल है और हमें तेज़ी से काम करके प्रदेश में प्रकल्पों व कार्ययुक्त स्थानों की संख्या बढ़ानी चाहिए। एक अन्य सत्र में संघ के प्रान्त प्रचार प्रमुख श्री अनिल कुमार जी प्रचारक ने अपने कार्य के प्रचार-प्रसार के लिए युगानुकूल आवश्यकता पर बल दिया तथा यह सावधानी बरतने पर ध्यान दिलाया कि कार्यकर्ताओं को प्रसि(प्राड्अनुमुख होकर अपने कार्यों के प्रचार पर ज़ोर देना चाहिए। भोजन की व्यवस्था श्री ओमप्रकाश जी वर्मा प्रान्त कार्यालय प्रमुख की देखरेख में हुई। श्री प्रहलाद राय सोलंकी प्रदेश उपाध्यक्ष, श्री शान्ति प्रकाश जी शर्मा प्रदेश कोषाध्यक्ष, श्री सी.पी. ग्रोवर प्रान्त लेखा निरिक्षक पूरा समय उपस्थित रहे। श्री अमरलाल परूथी ज़िलाध्यक्ष ने अपनी ज़िला टोली के साथ मिलकर पूरा समय देकर वर्ग की उत्तम व्यवस्था की।

-ओमप्रकाश वर्मा

सेवा भारती, यमुनानगर

कम्बलों का वितरण : 14 दिसम्बर 2015 को बाल संस्कार केन्द्र झुग्गी-झोंपड़ी में जरूरतमंद परिवारों को 70 कम्बलों का वितरण किया गया। यह कम्बल जगाधरी के सुप्रसिद्ध उद्योगपति व सरस्वती शोध संस्थान के प्रमुख व संघ के प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री दर्शन लाल जैन ने भेंट किये। हम सभी सेवा भारती के सदस्य उनकी दीर्घायु स्वस्थ जीवन के लिए प्रार्थना करते हैं। इस अवसर पर श्री योग ध्यान थरेजा नगर संरक्षक, नन्द लाल शर्मा जिला प्रमुख, नवीन त्यागी, नगर सचिव, घनश्याम जिन्दल सदस्य, नवीन गौतम प्रचार प्रमुख महेश नाँगिया व अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

20 दिसम्बर 2015 को St. Peter school यमुनानगर मॉडल टाऊन नज़दीक शास्त्री पार्क की प्रधानाचार्य ने अभिभावकों को प्रेरित करके ग़रीब परिवारों के लिए महिलाओं, पुरुषों, बच्चों के लिए जो बहुत से वस्त्र एकत्र किये और सेवा भारती यमुनानगर को समर्पित किये

जो ग़रीब परिवारों में वितरित किये। इस सर्दी के मौसम में जिन ग़रीब परिवारों ने ये वस्त्र पहने उनको दुआएँ दी। इस प्रकार से जो उन्होंने निःस्वार्थ भाव से सराहनीय कार्य किया उसके लिए हम सेवा भारती के सदस्यगण उनके आभारी हैं। इस प्रकार का प्रयास दूसरों को भी प्रेरित करता है।

21 दिसम्बर-2015 को बाल संस्कार पुराना हमीदा में 125 जर्सियाँ वितरित की गईं। ये जर्सियाँ सरस्वती शोध संस्थान के प्रमुख ने भेंट की। उन्होंने अपना नाम छापने के लिए मना किया था। उन्होंने कहा सेवा करने वालों को अपने नाम की चिन्ता नहीं करनी चाहिए, बल्कि अपने काम पर ध्यान देना चाहिए। सेवा तो अपनी आत्मिक शान्ति और सुख के लिए करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि दान तो ऐसी चीज है कि दाएँ हाथ से दिए गए दान की जानकारी बाएँ हाथ को भी नहीं होनी चाहिए। मंच का संचालन श्री नवीन त्यागी नगर सचिव ने किया।

इस अवसर पर सर्वश्री योग ध्यान थरेजा नगर संरक्षक, नन्द लाल शर्मा ज़िला प्रमुख, घनश्याम जिन्दल, महेश नाँगिया प्रचार प्रमुख, नवीन गौतम प्रचार प्रमुख सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे।

-**नवीन गौतम**, प्रचार प्रमुख

गीता जयन्ती समारोह में सेवा भारती करनाल

इस वर्ष हरियाणा सरकार ने हरियाणा के प्रत्येक जिले में गीता जयन्ती समारोह 19 से 21 दिसम्बर तक मनाया। सेवा भारती करनाल ने भी इसमें 20.12.15 को दोपहर 11.30 बजे आधे घंटे का साँस्कृतिक कार्यक्रम रखा। नीलोखेड़ी बाल संस्कार की पाँचवीं की कन्या कु॰ दियाँशु ने 'गीता सार' कविताबद्ध पाँच मिनट तक प्रस्तुत किया। स्वरूप निखार महावीर कालोनी, करनाल की कन्या कु॰ सपना ने गीत 'बेटी बोझ नहीं' सुनाई। दोनों से श्रोता बहुत प्रभावित हुए। इसी केन्द्र की एक कन्या कु॰ नर्गिस ने सुस्वर भावार्थ सहित गीता के संस्कृत के श्लोकों का गान किया। कु॰ सरिता ने "भारत की वीरांगना" गीत का गान किया। कु॰ प्रीति व काजल ने नृत्य "राधा कैसे न जले" एवं कु॰ नर्गिस, काजल एवं अन्य ने "तेरी यमुना दा मीठा पानी" पर नृत्य किया, जिसे देखकर श्रोता खूब आनन्दित हुए। सेवा भारती, करनाल के कार्यकर्त्ता सर्वश्री हरिकृष्ण नारंग, प्रेम कुमार खरबन्दा, सुरेश कुमार लूथरा, डॉ॰ ओ.पी. नारंग, श्रीमती कान्ता और अध्यापिकाएँ, सर्व श्रीमती सुषमा, शकुन्तला, ममता, बेबी, ब्रह्मा कुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय करनाल की दीदी बी. के. शिक्षा जी ने कार्यक्रम की सराहना की। -**नारंग**, ज़िला सचिव, करनाल

फिर निमोनिया कभी नहीं होगा

यह छाती की ऐसी बीमारी है, कभी-कभी जानलेवा भी हो सकती है। प्रकृति ने इस बीमारी के

लिए एक छोटी सी बूटी पैदा की हुई है। मुझे इस जड़ी-बूटी का नाम नहीं मालूम, परन्तु पिछले 40 वर्षों से निमोनिया के रोगियों के लिए प्रयोग कर रहा हूँ। जिसका शत्-प्रतिशत परिणाम है। हज़ारों लोग इसका लाभ उठा चुके हैं। इस जड़ी-बूटी के पत्तों का रस निकाल कर एक बार हाथों-पैरों के सभी नाखूनों पर लगा दिया जाए तो जल्दी ही इस बीमारी से मुक्ति मिल जाती है और जीवन भर फिर निमोनिया नहीं होता। हर आयु के लोगों को लाभ होता है। दवाई प्रातः 11.00 बजे से दोपहर 1.00 बजे तक नीचे लिखे पत्ते पर मिलती है। बृहस्पति को दुकान बन्द रहती है। एक दिन पहले फोन पर सम्पर्क कर लें तो ठीक रहेगा।

पता : मै. जैन सिल्क एण्ड साड़ीज़, 57-58, सरदार पटेल मार्किट,करनाल।

मो॰ : 9467342743, 9896042743

नोट : दिल में छेद का ईलाज भी हमारे पास है, यह मात्र एक टोटका है। बहुत लोगों को इसका लाभ हुआ। दोनों ईलाज निःशुल्क हैं।

सेवा भारती, टोहाना

गीता जयन्ती महोत्सव, इन्दिरा बस्ती में 21 दिसम्बर 2015 को सिलाई केन्द्र के प्रकल्प में मनाया गया। जिसमें प्रशिक्षण प्राप्त कर रही कन्याओं ने श्रीमद्भगवत् गीता के श्लोक अर्थ सहित उपस्थित जनों को आत्मविश्वास के साथ सुनाये तथा राष्ट्र भक्ति तथा प्रभु भक्ति के गीत भी प्रस्तुत किये। गीता के श्लोकों का शुद्ध उच्चारण हो, इसके लिए सेवानिवृत प्राचार्य लयबद्ध तरीके से प्रो. बी.डी. शास्त्री तथा श्री रामफल शर्मा दोनों निर्णायक मण्डल के अनुसार पारितोषिक की घोषणा की गई। सहभागियों को पुरस्कृत किया गया। नगर के सुप्रसिद्ध समाजसेवी डॉ. शिव सचदेवा ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। समाजसेवी श्री रामलाल जी पाहवा मुख्य अतिथि थे। माननीय नगर संघचालक श्री जगन्नाथ जी बंसल की उपस्थिति गौरवमयी रही। कार्यक्रम बस्ती के प्रतिष्ठितगण सर्वश्री विजय कुमार, भगवान दास, नगर पार्षद श्री ग्रेट जी, अध्यक्ष श्री हंसराज, सचिव श्री रायचंद जैन, कोषाध्यक्ष श्री मनफूल शर्मा तथा सदस्य श्री के.एल. रहलन, श्री सतप्रकाश शर्मा, श्री हरिचंद जी, श्री प्रेम जी, श्री प्रेमप्रकाश शास्त्री उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त फ्रैंडस क्लब तथा धर्म जागरण मंच का इस कार्यक्रम में विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. शिव सचदेवा ने एक-एक सिलाई मशीन प्रकल्पों को दी। श्री राजकुमार की ओर से गीता श्लोक में प्रतिभागी कन्याओं को एक-एक गीता भी दी।

-रायचंद जैन

महात्मा गांधी से एक स्वयंसेवक ने पूछा-'आप अँगरेज़ों से इतनी निर्भीकता से लोहा ले लेते हैं, क्या आप को कभी भय नहीं लगता? कभी आप को ऐसा नहीं लगता कि जिस मार्ग पर आप चल रहे हैं, वह ग़लत भी हो सकता है, संभवतया भारत को कभी आज़ादी नहीं ही मिले?' महात्मा गांधी बोले-'मित्र! मुझे आनंदित जीवन का रास्ता मालूम है। वह तंग ज़रूर

है, परंतु सीधा है। वह खांडे की धार के समान है, उस पर चलने में मुझे आनन्द आता है। यदि कभी उस पर चलते हुए मैं फिसल भी जाता हूँ तो मैं हृदय से भगवान को पुकारता हूँ। भगवान का वचन है, कि कल्याण-पथ पर चलने वाले की कभी दुर्गति नही होती। धर्म का पथ लेने वाले की रक्षा स्वयं भगवान करते हैं। भगवान के इस आश्वासन पर मेरी अटूट श्र(ा है। इस श्र(ा को मैं किसी भी कीमत पर गँवाऊँगा नहीं। ' उस स्वयंसेवक ने पुनः पूछा-'यदि इस पथ पर चलते चलते आप अपना जीवन गँवा बैठे तो?' गांधी जी बोले- 'मित्र इस संसार में अमरता लिखाकर तो कोई आया नहीं, पर यदि सन्मार्ग पर चलते हुए सदुद्देश्य के लिए यह शरीर नष्ट भी हो जाए तो उसकी मुझे परवाह नहीं। जीवन सही कार्यों में गया तो मेरी अंतरात्मा इसी से संतुष्ट रहेगी।'

'जीवन मिलना भाग्य की बात है, मृत्यु होना समय की बात है। पर मृत्यु के बाद भी लोगों के दिलों में जीवित रहना ये कर्मों की बात है।' **-बु(**

12वीं किस्त- 'आपात्काल में एक स्वयंसेवक का संघर्ष'

आपात्काल में उस आतंक के वातावरण में श्रीमती इन्दिरा गाँधी की सरकार पूरे ज़ोर-शोर से प्रचार कर रही थी, कि देश की जनता उसके साथ है, आपात्काल के कारण पूरे देश में शान्ति और पूर्ण अनुशासन है। सरकार यह भी प्रचार कर रही थी, कि सर्वदूर आपात्स्थिति का स्वागत हो रहा है, जो कुछ लोग अराजकता फैला रहे थे, उन्हें जेल में डाल दिया गया है। इस भ्रम को तोड़ने के लिए केन्द्रीय लोक संघर्ष समिति ने देशभर में सत्याग्रह करने का निर्णय लिया। हरियाणा में भी सभी ज़िला केन्द्रों पर सांकेतिक सत्याग्रह करने का निश्चय हुआ। इस यज्ञ में आहुति देने के लिए करनाल भी पीछे नहीं रहा। हरियाणा में मुख्यमन्त्री चौ॰ बन्सीलाल का भारी आतंक था, इस आतंक को भी तोड़ना आवश्यक था। जुलाई-75 के अन्तिम सप्ताह में ग्राम खेड़ीशरफ़अली (असन्ध) से श्री ज्ञानचन्द तथा असन्ध ा खास से श्री दर्शन लाल जी (अब दोनों स्वर्गीय) ने कर्ण गेट, करनाल के सामने जी.टी. रोड से सत्याग्रह शुरू कर दिया। दोनो सत्याग्रही 'भारत माता की जय, गूँजे धरती और आकाश, देश का नेता जय प्रकाश'-नारे लगाते हुए नगर की सड़कों पर घूमने लगे। पुलिस आई, उन्हें पकड़ा, डण्डों से दोनों को पीटते हुए पहले उन्हें सिटी थाने ले जाया गया। वहाँ उनका मुँह काला किया गया, गधे पर बिठाकर सारे नगर में घुमाते हुए, पीठ पर डण्डे बरसाते हुए, उन्हें कहा जाता-'बोलो इन्दिरा गाँधी की जय', परन्तु इन भारत माँ के लाडलों ने हर बार-भारत माता की जय का जयकारा बुलन्द किया। पूरे जी.टी. रोड बाज़ार से डण्डे बरसाते हुए उन्हें डेरी फार्म के सामने ज़िला जेल में ले गए। जिस समय उन्हें बैरक में ले जाया गया, उस समय मेरा छोटा भाई राम लाल अत्रेजा मेरे बदले में जेल में बन्द था, उन दोनों की दयनीय स्थिति देखकर उसने घर में सूचना भिजवाई, कि भाई साहब को कहना वह पुलिस के हत्थे न चढ़ें। दो मास तक यह दोनों जेल में दर्द से कराहते रहे। मैं जानता हूँ कि पुलिस किस बेरहमी से पीटती है, मैं भी कई बार स्वयं राजनैतिक

तौर पर पुलिस के डंडे खा चुका हूँ। इस घटना की सारे करनाल नगर में दबी जुबान में कई दिन तक चर्चा चलती रही। हमारे परिवार में एक बहुत ही लोकप्रिय आर्य समाजी डॉक्टर, स्वर्गीय डॉक्टर गणेश दास अत्रेजा हो चुके हैं, वह मेरे चाचा जी थे। इस घटना की चर्चा उन तक भी पहुँची, उन्होंने मेरी धर्मपत्नी श्रीमती संतोष अत्रेजा को बुलाकर कहा, कि ओम प्रकाश को कहो, कि मुझे मिले, मैं सब कुछ ठीक करा दूँगा। मेरी धर्मपत्नी ने यह सूचना मुझ तक पहुँचा दी। मैं एक दिन डॉक्टर साहब से मिलने प्रातःकाल मॉडल टाऊन, करनाल में उनके घर जा पहुँचा। मुझे देखकर तुरन्त मुझे अपने मकान के अन्दर के एक कमरे में ले गए। उन्होंने पहला प्रश्न किया, तू यहाँ कैसे आ गया? मैंने कहा आपने तो सूचना भेजी थी। ठीक है-ठीक है, देखो यहाँ के डिप्टी कमिश्नर श्री सुखदेव प्रशाद ने मुझे बुलाया था, उसने कहा है, कि या तो अपने भतीजे को कहो, कि वह इतना लिखकर दे दे, कि मैं आज के बाद संघ या जनसंघ में नहीं जाऊँगा और अपनी प्रैस पर जाकर बैठ जाए, अन्यथा उसकी पत्नी की नौकरी भी जाएगी और उसके बच्चे भूखे मरेंगे। इस पर मैंने डाक्टर साहब को एक शेर सुना दिया- **'जब से सुना है, ज़िन्दगी का अंजाम है मौत, सर पर कफ़न लपेटे, कातिल को ढूँढते हैं।'** मैंने आगे भी उनसे कहा, ये सब बातें संघ से और आपके आर्यसमाज से ही तो सीखी हैं। उन्होंने गुस्से में कहा-तू नहीं समझ सकता, तू नहीं जानता-तू परिवार को कितना नुकसान पहुंचा रहा है। मैं चुप-चाप वहाँ से उठकर चला आया। पूर्व के लेखों में मैं लिख चुका हूँ, कि सब से बड़ी समस्या मेरे लिए आर्थिक समस्या थी, इसलिए मैं अधिकारियों से कहता था, कि मुझे जेल में जाने दो और अधिकारियों के लिए कार्यकर्ताओं की कमी की समस्या थी। तो भी अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के कामागाटा मारू सम्मेलन में सत्याग्रह कराने के बाद मेरे पास मेरठ रोड करनाल से कुटेल जाने वाली सड़क की पहली पुली पर 2 जनवरी, 1976 को हुई बैठक में प्रदेश जनसंघ के महामन्त्री श्री पुरुषोत्तम देशमुख (अब स्वर्गीय) ने सूचना दी, कि अत्रेजा जी की इच्छा के अनुरूप उन्हें अनुमति मिल गई है, कि वह चण्डीगढ़ में विधान सभा पर 13 जनवरी, 1976 को सत्याग्रह करेंगे। मैं, गुलशन जी भाटिया, श्री राजेन्द्र जी वर्मा झंझाड़ी के साथ मिलकर अपना जत्था तैयार करने में जुट गया।

हरियाणा

विधानसभा पर सत्याग्रह का विवरण अगले अंक में जारी.....

सेवा दर्शन से प्रभु पूजा द्विमासिक पत्रिका, स्वामित्व- सेवा भारती (पंजी.) हरियाणा।
मुद्रक : जुगल बठला, मै. बठला प्रिंटर्ज़, विवेकानन्द विद्यालय परिसर, करनाल।
सम्पादक व प्रकाशक : ओम प्रकाश अत्रेजा, ई. 230, अर्जुन गेट, करनाल-132001